कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण व कैसे बनता है रेडियो नाटक?

कहानी का नाट्य रूपांतरण व रेडियो नाटक का अर्थ

कहानी का नाट्य रूपांतरण कहानी के अनुसार दृश्यों का उचित संयोजन कर और संवादों का समावेश कर उसे नाट्य रूपांतरण का रूप दिया जा सकता है। रंगमंच, फिल्म, टीवी धारावाहिक किसी कहानी का नाट्य रूपांतरण ही होते हैं।

रेडियो नाटक रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है, जिसमें किसी कहानी को शब्दों व ध्वनियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी एवं रेडियो नाटक का उद्देश्य

कहानी एवं रेडियो नाटक का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं का मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धन, सामाजिक संदेश (सामाजिक, नैतिक या सांस्कृतिक) देना और कल्पनाशक्ति को सक्रिय करना है। ये श्रव्य माध्यम के संवाद, ध्वनि प्रभाव और संगीत के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जिससे श्रोता स्वयं दृश्य की कल्पना कर सके।

कहानी का नाट्य रूपांतरण

किसी भी कहानी का नाटक में रूपांतरण करने के लिए हमें सबसे पहले कहानी और नाटक की विविधताओं व समानताओं को समझना होगा। जहाँ कहानी का संबंध केवल लेखक और नाटक से होता है, वहीं नाटक के द्वारा लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक तथा श्रोता एक-दूसरे से जुड़ते हैं। कहानी कही भी किसी के भी द्वारा पढ़ी और कही जा सकती है, परंतु नाटक को मंच के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। वैसे तो कहानी में भी नाटक की तरह ही एक कहानी होती है, पात्र होते हैं, परिवेश होता है, संवाद होते हैं, द्वंद्व होता है, परंतु नाटक को मंच पर संगीत, सज्जा, प्रकाश व्यवस्था के साथ-साथ अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

कथानक का दृश्यों में विभाजन

कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए पहले कहानी के कथानक (कथावस्तु) को समय तथा स्थान के आधार पर विभाजित करते हैं। कथानक में चुनकर निकाली गई घटनाओं के आधार पर दृश्य बनाया जाता है। एक ही समय-स्थान पर घटी घटना को एक दृश्य माना जाता है। अतः कथानक को समय तथा स्थान के आधार पर विभाजन करके दृश्यों को लिखा जाता है। दृश्य लिखते समय कथानक के अनावश्यक हिस्से को निकाल दिया जाता है, क्योंकि इससे नाटक की गति बाधित होती है। अतः प्रत्येक दृश्य का कथा के अनुसार तार्किक विकास किया जाता है। इसकी सुनिश्चितता के लिए दृश्य विशेष के उद्देश्य व उसकी